MP TET Varg 2 Secondary Teacher Hindi Language

Q1. आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्ति कौन-कौन सी है?
(A) धार्मिक साहित्य की रचना
(B) रासो साहित्य की रचना
(C) छप्पय, तोटक, तोमर, उरील और पदगडिया के साथ-साथ दोहा और चौपाई का भी भरपूर प्रयोग
(D) आश्रय दाताओं की वीरता का वास्तविक वर्णन
(a) A, B और D
(b) A, B और C
(c) B, C और D
(d) A, C और D

Q2. हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की पद्धति व उसका प्रयोग करने वाले साहित्यकार का असंगत क्रम छाटिए?
(a) वर्णानुक्रम पद्धति - गार्सा द तासी, शिवसिंह सेंगर
(b) कालानुक्रम पद्धति - ग्रियर्सन, मिश्र बंधु
(c) विधेयवादी पद्धति - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
(d) वैज्ञानिक पद्धति - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

Q3. 'फटिक शिलानि सौँ सुधारथ्या सुधा मंदिर' इस पंक्ति में कौन-कौन से अलंकार हैं?
(a) रूपक एवं श्लेष
(b) उपमा एवं रूपक
(c) अनुप्रास एवं उपमा
(d) उत्प्रेक्षा एवं अनुप्रास

Q4. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम है?
(a) क्या
(b) मैं
(c) आप
(d) वह

Q5. 'पाखंडी व्यक्ति' के लिए उपयुक्त मुहावरा है:
(a) बछिया के ताऊ
(b) बगुला भगत
(c) पैतरेबाज
(d) माई का लाल

Q6. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के हिंदी साहित्य के इतिहास से संबंधित असंगत क्रम है?
(a) इसकी रचना 1929 ई. में हुई थी
(b) यह इतिहास मूलत: हिंदी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिंदी शब्द सागर ' की भूमिका के रूप में ' हिंदी साहित्य का विकास' नाम से लिखा गया था
(c) इसके कवियों का परिचयात्मक विवरण मिश्र बंधु विनोद से लिया गया है
(d) इसमें हिंदी साहित्य के इतिहास को पांच काल खंडों में बांटा गया था

Q7. "झरना" (काव्य संग्रह) के रचयिता कौन हैं?
(a) सोहन लाल द्विवेदी
(b) महादेवी वर्मा
(c) जयशंकर प्रसाद
(d) सुभद्रा कुमारी चौहान

Q8. रामधारी सिंह दिनकर के बारे में कौन सा कथन असत्य है?
(a) रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय संस्कृतिक चेतना तथा प्रगतिवादी चेतना दोनों विद्यमान है
(b) रामधारी सिंह दिनकर को 'समय सूर्य' तथा 'अधैर्य का कवि' भी कहा जाता है
(c) दिनकर ने मैथिलीशरण गुप्त के सामने स्वयं को महज डिप्टी राष्ट्रकवि ही माना है
(d) दिनकर को उर्वशी महाकाव्य के लिए 1972 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया

Q9. महादेवी वर्मा के बारे में कौन सा कथन सही है?
A. यामा में निहार, रश्मि, नीरजा, संध्या गीत का संकलन किया गया है
B. महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की राधा कहा जाता है
C. उनके काव्य में विरह की प्रधानता है जो लौकिक न होकर अलौकिक विरह है
D. "में नीर भरी दुख की बदली" इनकी प्रसिद्ध पंक्ति है
E महादेवी जी के काव्य में रहस्यवाद प्रकृति विद्यमान नहीं है
(a) A, B और C सही
(b) A, C और D सही
(c) B, C और E सही
(d) C, D और E सही

Q10. 'खग कुल कुल-कुल सा बोल रहा' इस पंक्ति में अंलकार है-
(a) उपमा
(b) श्लेष
(c) रूपक
(d) यमक

Q11. निम्नलिखित वाक्य में कोष्टक में दिए गए शब्द का उपवाक्य का नाम बताइए
हरिश विद्यालय में मोहन और सोहन को बता रहा था (कि वह इस बार जयपुर घूमने जाएगा)
(a) संज्ञा उपवाक्य
(b) विशेषण उपवाक्य
(c) क्रिया- विशेषण उपवाक्य
(d) संकेतार्थक वाक्य

Q12. रूप के अनुसार क्रिया-विशेषण के भेद से संबंधित नहीं है?
(a) मूल क्रिया-विशेषण
(b) यौगिक क्रिया-विशेषण
(c) स्थानीय क्रिया-विशेषण
(d) अनुबद्ध

Q13. ज्यादा अपनी कम परायी संस्मरण किसका है?
(a) उपेंद्रनाथ अश्क
(b) अज्ञेय
(c) रवींद्र कालिया
(d) विष्णु प्रभाकर

Q14. 'कहानी का प्लॉट' कहानी किसकी है?
(a) फणीश्वर नाथ रेणु
(b) चंद्रधर शर्मा गुलेरी
(c) भीष्म साहनी
(d) शिवपूजन सहाय

Q15. निम्न को सुमेलित कीजिए -
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-i	सूची-ii
a. मेरा	i. पुरुष वाचक
b. कौन	ii. प्रश्न वाचक
c. सब	iii. निज वाचक
d. वह	iv. निश्चय वाचक

(a) a-iii, b-ii, c-iv, d-i
(b) a-i, b-iii, c-iv, d-ii
(c) a-ii, b-i, c-iii, d-iv
(d) a-iv, b-i, c-ii, d-iii

Q16. निम्नलिखित वाक्य में "पानी" किस कारक में है?
वाक्य: मैंने पानी से पौधे को सींचा।
(a) कर्ता
(b) कर्म
(c) करण
(d) संप्रदान

निर्देश (17-21): दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए|
शुक्लोत्तर समालोचकों ने शुक्लजी का महत्व स्वीकार करते हुए भी उनसे कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर मत भेद प्रकट किया। पं नन्द दुलारे वाजपेयी ने हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी में शुक्ल जी के छायावाद रहस्यवाद विषयक विचारों की आलोचना की। वाजपेयी जी के अनुसार स्थूल व्यवहारवाद को निस्सीम बतलाकर और रहस्यवाद की कनकौए से तुलनाकर विद्वान शुक्ल जी ने नवीन कविता के साथ अन्याय किया है। वाजपेयी जी का विचार है कि मनुष्य के अध्यात्म पक्ष का संपूर्ण निरूपण इस प्रकार की कविता की सीमा के अंतर्गत है। रहस्यवाद को कविता के क्षेत्र से खारिज नहीं कर सकते। वे छायावाद के प्रारंभिक और समर्थक थे। उन्होनें छायावाद के आध्यात्मिक पक्ष को शिकार करते हुए यह भी प्रकट किया कि छायावाद की मुख्य प्रेरणा धार्मिक न होकर मानवीय और सांस्कृतिक है।

Q17. वाजपेयी जी के अनुसार छायावाद की मुख्य प्रेरणा है
(a) आर्थिक
(b) सांस्कृतिक
(c) राजनीतिक
(d) धार्मिक

Q18. गद्यांश में उल्लिखत नवीन कविता का आशाय है:
(a) प्रगतिवाद
(b) छायावाद
(c) प्रयोगवाद
(d) नयी कविता

Q19. नन्द दुलारे वाजपेयी ने शुक्लजी के किन विचारों की आलोचना की?
(a) छायावाद-रहस्यवाद
(b) छायावाद-प्रगतिवाद
(c) छायावाद-प्रयोगवाद
(d) रहस्यवाद-प्रयोगवाद

Q20. नन्द दुलारे वाजपेयी किसके प्रारंभिक और समर्थक थे?
(a) छायावाद
(b) प्रयोगवाद
(c) प्रगतिवाद
(d) नयी कविता

Q21. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी किसकी पुस्तक है?
(a) नन्द दुलारे वाजपेयी
(b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल
(d) रामविलास शर्मा

निर्देश (22-26): दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए|
वैश्विक और क्षेत्रीय स्तर पर पृथ्वी की जलवायु में होने वाले परिवर्तन चिंता का विषय बने हुए हैं। ये परिवर्तन पृथ्वी के भीतर होने वाली उथल-पुथल के कारण तो हो ही रहे हैं पृथ्वीवासियों की ऐसी गतिविधियों के कारण भी हो रहे हैं जो जलवायु पर विपरीत असर डालते हैं। वास्तव में ग्रीन हाउस गैसों के भारी और अनियंत्रित उत्सर्जन से पृथ्वी गर्म हो रही। है जिसे "ग्लोबल वार्मिंग" के नाम से जाना जाता है। इसका कारण बड़ी-बड़ी मिलों और फैक्ट्रियों की चिमनियों से निकलने वाला प्रदूषणकारी धुंआ है। इससे पृथ्वी की ओजोन परत को हानि पहुंच रही है। ग्रीन हाउस गैसों का यह बेलगाम उत्सर्जन पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले चुका है और पृथ्वी पर जीवन के लिए गंभीर समस्या बन चुका है।
पृथ्वी के भीतर की घटनाओं पर तो हरला नियंत्रण नहीं है पर ऐसी गतिविधियों पर तो लगाम लगाई ही जा सकती है जो हमारे बस में है। इस गंभीर खतरे का ठोस हल निकालने के लिए वैश्विक स्तर पर कई प्रयास किए गए हैं। इनमें सबसे ज्यादा प्रदूषण फैलाने वाले बीस देशों के बीच ग्रीन हाउस गैसों पर नियंत्रण कर भविष्य में ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के उपायों पर सहमति बनाना, जलवायु परिवर्तन पर नियंत्रण के लिए कार्ययोजना का खाका तैयार करना तथा इन गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए विकसित और विकासशील देशों के बीच लम्बी अवधि की रणनीति बनाना शामिल है। इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कदम "क्योटो, प्रोटोकोल " है।
क्योटो प्रोटोकोल एक अंतर्राष्ट्रीय करार है जिसका मुख्य लक्ष्य औद्योगिक देशों में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना है। ग्लोबल वार्मिंग के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए किए गए इस करार में औद्योगिक देशों से प्रयास अपेक्षित है कि वे विकासशील देशों में इन गैसों के उत्सर्जन से रहित परियोजनाओं को बढ़ावा दें। इसके लिए वे उन योजनाओं को वित्त उपलब्ध कराएं जो हानिकारक गैसों का उत्सर्जन नहीं करती हों। इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि उक्त प्रोटोकोल में ऐसे देशों को दंडित करने की व्यवस्था की गई है, जो एक अनुमत अधिकतम सीमा से ज्यादा कार्बन डाईऑक्साइड गैस का उत्सर्जन करते हैं। साथ ही, ऐसे देशों को लाभ पहुंचाने की व्यवस्था भी की गई है जो वास्तव इन गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने वाली परियोजनाओं में निवेश करते हैं। यह लाभ उन्हें अपनी बचाई गई कार्बन उत्सर्जन यूनिट ऐसे विकसित देशों को बेचकर मिल सकता है जो सीमा से अधिक कार्बन उत्सर्जन करते हैं। ये यूनिट बेच कर विकासशील देश काफी लाभ कमा सकते हैं, वहीं अधिक प्रदूषण फैलाने वाले विकसित/ औद्योगिक देशों को यूनिटें खरीदने पर काफी खर्च करना होगा, जो उनके लिए दण्ड समान है। इससे बचने के लिए वे भी गैसों से उत्पन्न प्रदूषण को कम करने

की कोशिश करेंगे। उक्त प्रयासों के अलावा वैज्ञानिक भी अपने स्तर पर ऐसी तकनीकें विकसित करने में लगे है जिससे यह खतरा कम हो। इनमें ऐसी तकनीक विकसित करना शामिल है जिसमें हानिकारक गैसों को तरल रूप में बदल कर भीतर विशेष भंडारगृहों में दबाया जाएगा। वैज्ञानिकों के प्रयास अपनी जगह हैं। इलाज से बेहतर यही है बीमारी कि रोकथाम की जाए। इसके लिए यह जरूरी है कि इन हानिकारक गैसों के उत्सर्जन को यदि पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा तो कम से कम उसकी मात्रा न्यूनतम किया जाए ताकि उसके दुष्परिणामों को सीमित किया जा सके।

Q22. इस गद्यांश में मुख्यतः किस विषय पर चर्चा की है?
(a) क्योटो प्रोटोकोल के कार्यान्वयन पर
(b) पृथ्वी की जलवायु में होने वाले परिवर्तनों पर
(c) प्रदूषण गंभीर खतरों और उनकी रोकथाम पर
(d) कार्बन उत्सर्जन यूनिट की खरीद बेच के लाभों पर

Q23. पृथ्वी की जलवायु में होने वाले परिवर्तन चिंता का विषय क्यों है?
(a) इनसे पृथ्वी पर प्रदूषण बढ़ने का खतरा है
(b) ग्रीन हाउस गैसों के अनियंत्रित होने का खतरा है।
(c) पृथ्वी के भीतर भारी उथल-पुथल का खतरा है
(d) इनसे पृथ्वी पर जीवन के लिए खतरा है

Q24. 'क्योटो प्रोटोकोल' का मुख्य उद्देश्य है-
(a) औद्योगिक देशों की बेलगाम ग्रीन हाउस गैसों के लिए उन्हें दंडित करना
(b) औद्योगिक देशों के ग्रीन हाउसगैसों के उत्सर्जन पर लगाम लगाना
(c) उन योजनाओं को वित्त उपलब्ध कराना जो हानिकारक गैसों का उत्सर्जन नहीं करतीं
(d) (b) और (c) दोनों

Q25. 'ग्लोबल वार्मिंग' के खतरे से बचने के लिए किए जाने वाले उपायों में शामिल है-
(a) विकासशील देशों में इन हानिकारक गैसों के उत्सर्जन से रहित परियोजनाओं को बढ़ावा देना
(b) हानिकारक गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए विकसित और विकासशील देशों के बीच लम्बी अवधि की रणनीति बनाना
(c) हानिकारक गैसों को तरल रूप में बदलकर जमीन के भीतर दबाना
(d) ज्यादा प्रदूषण फैलाने वाले देशों के बीच ऊर्जा की भावी जरूरतों को पूरा करने के उपायों पर सहमति बनाना

Q26. "ग्लोबल वार्मिंग"से तात्पर्य है-
(a) ओजोन परत का गर्म होना
(b) पृथ्वी का गर्म होना
(c) गर्म गैसों का ओजोन परत पर पड़ने वाला प्रभाव
(d) पृथ्वी के भीतर होने वाली उथल-पुथल

Q27. निम्नलिखित प्रश्न में, चार विकल्पों में से उस विकल्प का चयन करें जो दिए गए शब्द का सही समानार्थी नहीं है।
कुसुमाकर-
(a) मधु
(b) इन्द्रलोक
(c) माधव
(d) ऋतुराज

Q28. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा है?
निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यान पूर्वक पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(a) गाय
(b) पहाड़
(c) यमुना
(d) आम

Q29. 'उत्कर्ष' का विलोम शब्द है-
(a) उपकार
(b) उन्नति
(c) अपकर्ष
(d) इनमें से कोई नहीं

Q30. निम्नलिखित प्रश्न में, चार विकल्पों में से उस विकल्प का चयन करें जो दिये गए शब्द का सही तद्भव शब्द है।
कोटर
(a) शत
(b) नित्य
(c) कोटक
(d) खोखल

Solutions

S1. Ans.(b)
Sol. आश्रय दांतो की वीरता का वास्तविक वर्णन नहीं हुआ है वल्कि उनकी वीरता का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन हुआ है
इसकी अन्य प्रमुख प्रवृतियां -
ऐतिहासिकता का अभाव - रासो साहित्य के चरित्र नायक ऐतिहासिक व्यक्ति है किंतु इन काव्य ग्रंथों में ऐतिहासिकता की रक्षा नहीं की गई है वस्तुतः इन ग्रंथों में तथ्य कम में और कल्पना अधिक है इन ग्रंथों के रचयिताओ ने जो वर्णन किया है वे तत्कालीन इतिहास से मेल नहीं खाते
युद्ध वर्णन में संजीवता - रासो ग्रंथ में दिए गए युद्ध वर्णन संजीव प्रतीत होते इनका ग्रंथों में जहां जाएं युद्ध वर्णन के प्रसंग है वहां ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे कवि युद्ध का आंखों देखा हाल सुना रहा है
प्रमाणिकता में संदेह - आदिकाल के अधिकांश रासो कवियों की प्रमाणिकता संदिग्ध पृथ्वीराज रासो किस काल की प्रमुख रचना बतायी गई ह वह भी अप्रमाणिक मानी गई है
वीर एवं श्रृंगार रस की प्रधानता है, आश्रय दाताओं की प्रशंसा, संकुचित राष्ट्रीयता, कल्पना की प्रचुरता, डिंगल पिंगल भाषा का प्रयोग, अलंकारों का स्वाभाविक समावेश व छप्पय, तोटक,तोमर, उरील और पदगडिया के साथ-साथ दोहा और चौपाई का भी भरपूर प्रयोग

S2. Ans.(d)
Sol. हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की पद्धति व उसका प्रयोग करने वाले साहित्यकार -
वर्णानुक्रम पद्धति - गार्सा द तासी, शिवसिंह सेंगर (इस पद्धति को वर्णमाला पद्धति भी कहा जाता है इसमें लेखकों कवियों का परिचयात्मक विवरण उनके नाम के वर्णानुक्रम के अनुसार किया जाता है इस पद्धति में कबीर और केशव का विवेचन एक साथ इसलिए करना पड़ेगा क्योंकि दोनों के नाम 'क' अक्षर से प्रारंभ होते ही भले ही बे कालक्रम की दृष्टि से भक्तिकाल रीतिकाल कवियों में अलग-अलग कालो से संबंधित हो)
कालानुक्रम पद्धति - ग्रियर्सन, मिश्र बंधु (इस पद्धति में कवियों लेखकों का विवरण ऐतिहासिक कालक्रमनुसार तिथिक्रम से होता है प्राय: कृतिकार की जन्मतिथि को आधार मानकर ही इतिहास ग्रंथ में उसका क्रम निर्धारण किया जाता है)
विधेयवादी पद्धति - आचार्य रामचंद्र शुक्ल (साहित्य का इतिहास लिखने में यह पद्धति सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हुई है इस पद्धति के जन्मदाता वेन/ तेन माने जाते हैं जिन्होंने विधेयवादी पद्धति को तीन शब्दों में बाटा है -जाति, वातावरण ओर छण विशेष! साहित्य के इतिहास को समझने के लिए उससे संबंधित जातीय परंपराओ तदयुगीन वातावरण एवं परिस्थितियों का वर्णन विश्लेषण अपेक्षित होता है)

वैज्ञानिक पद्धति - आचार्य गणपति चंद्रगुप्त (वैज्ञानिक पद्धति में इतिहास लेखक पूर्णत: निरपेक्ष एक तटस्थ रहकर तथ्य संकलन करता है और उन्हें क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत कर देता हैं इसमें क्रमबद्धता एवं तर्क पुष्टता अनिवार्य रूप में होती है इस पद्धति में भी वही दोष है जो कालक्रमानुसारी पद्धति में है इतिहास का तथ्य संकलन मात्र ना होकर व्याख्या विश्लेषण की अपेक्षा भी करता है इन विद्वानों के तथ्य संग्रह उपयोगी तो हो सकते हैं पर वह पूर्ण सफल तभी कहला सकते है,जब व्याख्या एवं विश्लेषण पर अपेक्षित ध्यान दें

S3. Ans.(c)

Sol. इस पंक्ति में अनुप्रास और उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है। अनुप्रास अलंकार का प्रयोग तब होता है जब पंक्ति में एक ही ध्वनि या अक्षर का बार-बार आवृत्ति होती है। उदाहरण के लिए, 'सुधारथ्या' और 'सुधा' में 'स' ध्वनि की पुनरावृत्ति अनुप्रास का संकेत है। उपमा अलंकार तब होता है जब किसी वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है। यहाँ 'फटिक शिलानि' (स्फटिक की शिला) को किसी विशेष वस्तु के रूप में उपमा दी गई है, जिससे उपमा अलंकार का प्रयोग स्पष्ट होता है। इस प्रकार, इस पंक्ति में अनुप्रास और उपमा दोनों अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है।

Additional information:

• **रूपक एंव श्लेष :** रूपक अलंकार तब होता है जब उपमेय को उपमान के रूप मे प्रस्तुत किया जाता है, जैसे : सूर्य को आग का गोला खा जाना , यहाँ सूर्य उपमेय और आग का गोला उपमान है|

• **श्लेष अलंकार:** तब होता है जब एक शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ निकलते है , जैसे: कमल नयन मे कमल का अर्थ फूल भी हो सकता है और भगवान विष्णु के नेत्र भी |

• **उपमा अलंकार:** जब उपमेय और उपमान के बीच किसी गुण के आधार पर तुलना की जाती है| इस अलंकार मे तुलना के लिए जैसे, समान, सम आदि शब्दो के प्रयोग होता है|

• **अनुप्रास अलंकार :** वह अलंकार है जिसमे एक ही ध्वनि या वर्ण की आवृत्ति होती है , जिससे कविता या गद्य मे संगीतात्मक उत्पन्न होती है|

• **उत्प्रेक्षा अलंकार :** यहा अलंकार तब होता है जब किसी वस्तु की कल्पना किसी वस्तु के समान या रूप मे की जाती है इसमे “मानो”, जैसे , प्राय: आदि शब्दो का प्रयोग करके यह दिखाया जाता है की एक वस्तु दूसरी वस्तु के समान या रूप मे दिखती है | उदाहरण के लिए “वह चमक रहा है मानो सूर्य हो “ यहाँ व्यक्ति को सूर्य के समान चमकते हुये दिखाया गया है|

S4. Ans.(d)

Sol. सही उत्तर:(D) वह

व्याख्या:

निश्चयवाचक सर्वनाम वे शब्द होते हैं जो किसी व्यक्ति, वस्तु, या स्थान की ओर निश्चित रूप से संकेत करते हैं।

• **"वह"** निश्चयवाचक सर्वनाम है क्योंकि यह स्पष्ट रूप से किसी दूर की वस्तु या व्यक्ति को इंगित करता है।

o उदाहरण: **"वह पुस्तक मेरी है।"**

विकल्पों का विश्लेषण:

विकल्प	शब्द	सर्वनाम का प्रकार	कारण
(A)	क्या	प्रश्नवाचक सर्वनाम	यह प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग होता है।
(B)	मैं	पुरुषवाचक सर्वनाम	यह पहले व्यक्ति को दर्शाता है।
(C)	आप	पुरुषवाचक सर्वनाम	यह दूसरे व्यक्ति को संबोधित करता है।
(D)	वह	निश्चयवाचक सर्वनाम	**सही उत्तर**, क्योंकि यह दूर की किसी वस्तु/व्यक्ति की ओर संकेत करता है।

निष्कर्ष:

"वह" निश्चयवाचक सर्वनाम है, जो किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु, या स्थान को इंगित करता है।

इसलिए, सही उत्तर है: **(D) वह।**

S5. Ans.(b)

Sol. ‘बगुला भगत’ एक ऐसा मुहावरा है जो पाखंडी व्यक्ति को दर्शाने के लिए उपयोग होता है। यह ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है जो बाहर से धार्मिक या पवित्र दिखता है लेकिन अंदर से धूर्त या कपटी होता है।

Information Booster:
1. मुहावरे भाषा को प्रभावी और रोचक बनाते हैं।
2. 'बगुला भगत' दिखावे के धर्मी या धार्मिक लोगों का प्रतीक है।
3. मुहावरे का अर्थ प्रायः संदर्भ से समझा जाता है।

Additional Knowledge:
- **बछिया के ताऊ :** भ्रमित व्यक्ति को दर्शाता है।
- **पैतरेबाज:** चालाक व्यक्ति के लिए उपयोग होता है।
- **माई का लाल:** साहसी और निर्भीक व्यक्ति का प्रतीक है।

S6. Ans.(d)
Sol. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य का इतिहास 1929 ई. का काल विभाजन भागों में किया है
1. वीरगाथा काल (आदिकाल 1050-1375वि.)
2. भक्तिकाल (1375-1700 वि.)
3. रीतिकाल (1700-1900वि.)
4. गद्यकाल (1900- 1984वि.)

उन्होंने काल विभाजन प्रधान प्रवृति और ग्रंथों की प्रसिद्धि के आधार पर किया है जिस कालखंड में विशेष धन की रचनाएं अधिक मिली उसे एक अलग कालखंड माना गया और रचनाओं की प्रतियोगिता के आधार पर प्रधान परवर्ती का निर्धारण कर लिया गया प्रधान प्रवृत्ति के लिए लोक प्रसिद्ध ग्रंथों को भी आधार बनाया गया है प्लीज के कवियों का परिचयात्मक विवरण मिश्र बंधुओं से ही लिया गया है और यह इतिहास मूल्य तय हिंदी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिंदी शब्द सागर की भूमिका' के रूप में 'हिंदी साहित्य के विकास 'से के नाम से लिखा गया और बाद में इसका नाम 'हिंदी साहित्य का इतिहास ' रखा गया

S7. Ans.(c)
Sol. झरना (काव्य) के रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। यह पुस्तक छायावादी कविता की प्रारम्भिक पुस्तक है। छायावाद का प्रारम्भ झरना के प्रकाशन से ही माना जाता है।

S8. Ans.(d)
Sol. रामधारी सिंह दिनकर (1908-1974 ई०)
रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय संस्कृतिक चेतना तथा प्रगतिवादी चेतना दोनों विद्यमान है
रामधारी सिंह दिनकर को 'समय सूर्य' तथा 'अधैर्य का कवि' भी कहा जाता है
दिनकर ने मैथिलीशरण गुप्त के सामने स्वयं को महज डिप्टी राष्ट्रकवि ही माना है
दिनकर को उर्वशी महाकाव्य के लिए 1972 में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया उर्वशी एक गीतिनाट्य है
अन्य रचनाएं रेणुका, हुकार, रसवंती, द्वंदगीत, कुरुक्षेत्र(1946 प्रबंध काव्य), रश्मिरथी आदि है

S9. Ans.(b)
Sol. महादेवी वर्मा (1907-1987 ई.)
यामा में निहार, रश्मि,नीरजा, संध्या गीत का संकलन किया गया है
महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है
उनके काव्य में विरह की प्रधानता है जो लौकिक न होकर अलौकिक विरह है
"में नीर भरी दुख की बदली" इनकी प्रसिद्ध पंक्ति है
महादेवी जी के काव्य में रहस्यवाद प्रकृति विद्यमान है
नीहार - 1930
रश्मि - 1932
नीरजा - 1935
संध्या गीत - 1936
यामा – 1940

S10. Ans.(d)

Sol. सही उत्तर: D. यमक

व्याख्या:

• इस पंक्ति में "कुल" शब्द का अलग-अलग अर्थों में दोहराव हुआ है।

1. **प्रथम "कुल":** इसका अर्थ है पक्षियों का समूह।
2. **द्वितीय और तृतीय "कुल-कुल":** इसका अर्थ पक्षियों के कलरव या उनकी आवाज है।

• एक ही शब्द "कुल" के भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग होने के कारण **यमक अलंकार** होता है।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण और उदाहरण:

विकल्प	अलंकार का विवरण	उदाहरण	संदर्भ में लागू
A. उपमा	उपमा अलंकार में उपमेय (जिसकी तुलना हो रही है) और उपमान (जिससे तुलना हो रही है) के बीच समानता व्यक्त की जाती है।	लाल किरण-सी चोंच खोल ("चोंच" की तुलना लाल किरण से की गई है।)	"खग कुल कुल-कुल सा बोल रहा" में उपमेय और उपमान के बीच कोई स्पष्ट तुलना नहीं है।
B. श्लेष	श्लेष अलंकार में एक शब्द का एकाधिक अर्थ होता है, और वे सभी संदर्भ में उपयुक्त होते हैं।	पानी गये न ऊबरैं, मोती मानुष चून।	यहाँ "कुल-कुल" शब्द का एक ही अर्थ है, इसलिए श्लेष नहीं है।
C. रूपक	रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान को एक ही रूप में प्रस्तुत किया जाता है।	**शशि-मुख** पर घूँघट डाले अंचल में दीप छिपाये	"खग कुल कुल-कुल" में किसी वस्तु या व्यक्ति को किसी और रूप में नहीं दिखाया गया है।
D. यमक	जिस वाक्य में एक ही शब्द की बार-बार पुनरावृत्ति होती है, लेकिन हर बार उस शब्दा का अर्थ अलग-अलग होता है तो उसे वहां पर यमक अलंकार आता है।	**कनक-कनक** ते सौ गुनी , मादकता अधिकाय। **या खाए** बौराय जग,**या पाए** बौराय।	यहाँ "कुल-कुल" शब्द का अलग-अलग अर्थ है, इसलिए यह यमक अलंकार है।

निष्कर्ष:

इस पंक्ति में "कुल" शब्द का अलग-अलग अर्थों में प्रयोग हुआ है, जिससे **यमक अलंकार** स्पष्ट होता है।

नीचे अलंकार के प्रकारों की सारणी दी जा रही है:

अलंकार के भेद	प्रकार
शब्दा अलंकार	अनुप्रास
	यमक
	श्लेष
	पुनरुक्ति
	विप्सा
	वक्रोक्ति
अर्था अलंकार	उपमा
	रूपक
	उपेक्षा
	मानवीकरण
	विरोधाभास
	संदिग्ध
	अतिशयोक्ति
	28 और प्रकार है।
उभया अलंकार	संसृस्टि
	संकर

यह सारणी अलंकार के विभिन्न प्रकारों और उनके उपप्रकारों को स्पष्ट करती है।

S11. Ans.(a)

Sol. हरीश विद्यालय में मोहन और सोहन को बता रहा था (कि वह इस बार जयपुर घूमने जाएगा) कोष्ठक में दिए गए शब्द का उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य है

संज्ञा उपवाक्य -

जब किसी आश्रित उपवाक्य का प्रयोग प्रधान वाक्य में आए किसी संज्ञा पद के स्थान पर होता है तो उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं

- इस उपवाक्य का प्रारंभ प्राय: संयोजक पद 'कि' से होता है
- उदाहरण- गांधी जी ने कहा (कि सदा सत्य बोलो)

विशेषण उपवाक्य -

जब कोई उपवाक्य जो प्रधान उपवाक्य में आए किसी संज्ञा या सर्वनाम पद की विशेषता बताता है उसे विशेषण उपवाक्य कहलाता है

- विशेषण उपवाक्यों का आरंभ जो, जिसका, जिसकी, जिसके, जिन्हें, जिनका, जिनकी, जिनके से होता है
- उदाहरण -आज विद्यालय में गुरुजी शर्मा जी के बारे में बता रहे थे जिनको सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान दिया है

क्रिया- विशेषण उपवाक्य -

वह आश्रित उपवाक्य जो प्रधान उपवाक्य में आए क्रिया पदों की विशेषता बताता है, क्रिया विशेषण उपवाकय कहलाता है

- इन वाक्यों का आरंभ- यदि, जहां, जैसे, यद्यपि, क्योंकि, जब, तब आदि से शुरू होता है
- उदाहरण- यदि राम परिश्रम करता तो अवश्य उत्तीर्ण होता

संकेतार्थक वाक्य -

- जिस वाक्य में संकेत या शर्त का भाव प्रकट होता है, संकेतार्थक वाक्य कहलाता है
- उदाहरण- मैं वहां जाऊंगा यदि तुम मेरे साथ चलोगे

S12. Ans.(d)

Sol. (1) प्रयोग के अनुसार- (i) साधारण (ii) संयोजक (iii) अनुबद्ध

(2) रूप के अनुसार- (i) मूल क्रियाविशेषण (ii) यौगिक क्रियाविशेषण (iii) स्थानीय क्रियाविशेषण

(3) अर्थ के अनुसार- (i) परिमाणवाचक (ii) रीतिवाचक

S13. Ans.(a)

Sol. 'ज्यादा अपनी कम परायी' संस्मरण उपेंद्रनाथ अश्क का है इसका प्रकाशन वर्ष 1959 ई. है

उपेंद्रनाथ अश्क के अन्य संस्मरण –

- रेखाएं और चित्र 1955 ई., मंटो मेरा दुश्मन 1956 ई.

अज्ञेय का संस्मरण –

- स्मृति लेखा (1986 ई.)

रवींद्र कालिया का संस्मरण –

- सृजन के सहयात्री 1996 ई.

विष्णु प्रभाकर के संस्मरण –

- जाने अनजाने 1962 ई., यादों की तीर्थ यात्रा 1981 ई., मेरे अग्रज मेरे मीत 1983 ई., समांतर रेखाएं, हम इनके ऋणी है, एक दिशाहीन सफर, साहित्य के स्वप्न पुरुष, राह चलते-चलते, हमारे पथ प्रदर्शक, हमसफर मिलते हैं, सृजन के सेतु 1990 ई., आकाश एक है, यादों की छांव में

S14. Ans.(d)

Sol. कहानी का प्लांट कहानी शिवपूजन सहाय की है

यह कहानी 1928 ई.में प्रकाशित हुई

यह कहानी शिवपूजन सहाय द्वारा रचित आत्मकथा शैली में लिखी गई आंचलिक कहानी है

शिवपूजन सहाय की अन्य कहानी –

- महिला का महत्व 1922 ई. है

चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानियाँ –

• सुखमय जीवन 1911 ई., बुद्धू का कांटा 1914 ई. उसने कहा था 1915 ई.

भीष्म साहनी की अन्य कहानियाँ –

• भाग्य रेखा 1953 ई., पहला पाठ 1957 ई., भटकती राख 1966 ई., पटरिया 1973 ई., वाडचु 1978 ई., शोभायात्रा 1981 ई., निशाचर 1983 ई., पाली 1988 ई., डायन 1998 ई.

फणीश्वर नाथ रेणु की कहानियाँ –

• ठुमरी 1959 ई.,आदिम रात्रि की महक 1967 ई., अग्निखोर1973 ई., एक श्रावनी दोपहर की धूप 1984 ई., अच्छे आदमी 1986 ई.

S15. Ans.(a)

Sol. सही उत्तर: (a) a-iii, b-ii, c-iv, d-i

व्याख्या:

इस प्रश्न में विभिन्न प्रकार के सर्वनामों का वर्गीकरण उनके विशेष भेद के आधार पर किया गया है। प्रत्येक विकल्प को समझने के लिए हम अलग-अलग सर्वनामों का अर्थ और उनके वर्गीकरण को समझते हैं।

1. **a. मेरा (निजवाचक सर्वनाम)**
   - o "मेरा" निजवाचक सर्वनाम का उदाहरण है। निजवाचक सर्वनाम वे होते हैं जो स्वामित्व या निजता को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार "मेरा" का उपयोग किसी वस्तु के व्यक्तिगत अधिकार को दर्शाने के लिए होता है, जैसे "यह मेरा घर है।"
2. **b. कौन (प्रश्नवाचक सर्वनाम)**
   - o "कौन" प्रश्नवाचक सर्वनाम का उदाहरण है। प्रश्नवाचक सर्वनाम का उपयोग किसी जानकारी को प्राप्त करने के उद्देश्य से किया जाता है। उदाहरण के लिए, "कौन आ रहा है?" में "कौन" एक प्रश्नवाचक सर्वनाम है, जो सवाल को इंगित करता है।
3. **c. सब (अनिश्चयवाचक सर्वनाम)**
   - o "सब" एक अनिश्चयवाचक सर्वनाम है। यह अनिश्चितता या सामान्यता को दर्शाता है, जैसे "सब लोग यहाँ हैं।" इसमें किसी विशेष व्यक्ति की ओर संकेत नहीं होता, बल्कि सामान्य रूप से सभी की ओर संकेत होता है।
4. **d. वह (पुरुषवाचक सर्वनाम)**
   - o "वह" एक पुरुषवाचक सर्वनाम है जो किसी विशेष व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करता है। जैसे, "वह मेरी पुस्तक है।" यहाँ "वह" एक निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर इंगित करता है।

निष्कर्ष:

इन सर्वनामों के प्रकारों को सूची के अनुसार मिलाने पर सही उत्तर (a) a-iii, b-ii, c-iv, d-i आता है।

S16. Ans.(c)

Sol. हिंदी भाषा में कारक उस संबंध को दर्शाते हैं जो संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ होता है। कारक विभक्ति चिन्हों के माध्यम से पहचाने जाते हैं। आइए, वाक्य "मैंने पानी से पौधे को सींचा" का विश्लेषण करें।

• कर्ता कारक: कर्ता वह होता है जो क्रिया को करता है। इस वाक्य में "मैंने" कर्ता है, क्योंकि "मैं" क्रिया (सींचना) को कर रहा है।

• कर्म कारक: कर्म वह होता है जो क्रिया का प्रभाव सहन करता है। इस वाक्य में "पौधे को" कर्म है, क्योंकि पौधा क्रिया (सींचना) का प्रभाव सहन कर रहा है।

• करण कारक: करण वह होता है जो क्रिया को संपन्न करने का साधन या उपकरण होता है। इस वाक्य में "पानी" करण कारक है, क्योंकि "पानी" वह साधन है जिससे पौधे को सींचने की क्रिया संपन्न हो रही है। विभक्ति चिन्ह "से" यह दर्शा रहा है कि "पानी" करण कारक है।

• सम्प्रदान कारक: सम्प्रदान कारक वह होता है जो क्रिया के लिए लाभ या हानि का उद्देश्य हो। इस वाक्य में ऐसा कोई तत्व नहीं है जो सम्प्रदान कारक हो।

निष्कर्ष:

वाक्य "मैंने पानी से पौधे को सींचा" में "पानी" करण कारक है। करण कारक वह कारक होता है जो क्रिया का साधन या उपकरण होता है, और यहाँ "पानी" सींचने की क्रिया का साधन है। इसलिए, सही उत्तर (c) करण है।

S17. Ans.(b)

Sol. वाजपेयी जी के अनुसार छायावाद की मुख्य प्रेरणा सांस्कृतिक है। गद्यांश में वाजपेयी जी ने स्पष्ट किया है कि छायावाद की प्रेरणा धार्मिक नहीं, बल्कि मानवीय और सांस्कृतिक है। उन्होंने छायावाद के आध्यात्मिक पक्ष को प्रकट करते हुए कहा कि इसे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखना गलत होगा, क्योंकि इसका प्रमुख उद्देश्य मानवता और संस्कृति का विकास है।

Information Booster:
• छायावाद हिंदी कविता की एक महत्वपूर्ण धारा है, जिसमें भावनात्मक और आध्यात्मिक तत्वों को प्रमुखता दी गई है।
• वाजपेयी जी के अनुसार छायावाद केवल धार्मिक नहीं है, बल्कि इसमें मानवीय संवेदनाएं और सांस्कृतिक मूल्य अधिक महत्व रखते हैं।
• छायावाद का साहित्यिक योगदान हिंदी काव्य में एक नई दिशा प्रदान करता है, जिसमें व्यक्ति और समाज की गहरी भावनाओं को अभिव्यक्त किया गया है।
• सांस्कृतिक प्रेरणा छायावाद में आध्यात्मिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में देखी जा सकती है।
Additional Knowledge:
• **आर्थिक:** छायावाद की प्रेरणा आर्थिक नहीं थी, इसका उद्देश्य मानवीय और सांस्कृतिक भावनाओं को व्यक्त करना था।
• **राजनीतिक:** छायावाद का राजनीति से सीधा संबंध नहीं था, यह मुख्य रूप से साहित्यिक और सांस्कृतिक आंदोलन था।
• **धार्मिक:** छायावाद को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखना गलत है, क्योंकि इसमें धार्मिकता से अधिक सांस्कृतिक तत्व शामिल हैं।

S18. Ans.(b)
Sol. गद्यांश में उल्लिखित "नवीन कविता" का आशय छायावाद से है। वाजपेयी जी ने छायावाद की नयी काव्य दृष्टिकोण को "नवीन कविता" के रूप में संबोधित किया है और इसे शुक्ल जी के विचारों के खिलाफ नवीनता और आध्यात्मिक पक्ष के साथ जोड़ा है। उन्होंने छायावाद के साथ किए गए अन्याय का उल्लेख किया है और इसे कवि के अध्यात्मिक पक्ष के पूर्ण निरूपण का हिस्सा बताया है।
Information Booster:
• छायावाद को हिंदी साहित्य में नवीन कविता के रूप में देखा गया क्योंकि इसमें काव्य में नयी भावनाओं और आध्यात्मिकता को लाया गया।
• छायावाद ने कविता को व्यक्तिगत और आंतरिक भावनाओं से जोड़कर उसे नए आयाम दिए।
• वाजपेयी जी ने शुक्ल जी की आलोचना करते हुए छायावाद के महत्त्व को पुनः स्थापित किया और इसे नवीन कविता के रूप में देखा।
Additional Knowledge:
• **प्रगतिवाद:** प्रगतिवाद समाजवादी विचारधारा से प्रेरित साहित्यिक आंदोलन है, जिसका छायावाद से कोई संबंध नहीं है।
• **प्रयोगवाद:** प्रयोगवाद छायावाद से भिन्न था और यह 20वीं शताब्दी के मध्य में प्रयोगधर्मी काव्य शैलियों पर केंद्रित था।
• **नयी कविता:** नयी कविता छायावाद के बाद की कविता धारा है, जो छायावाद से आगे बढ़ी।

S19. Ans.(a)
Sol. नन्द दुलारे वाजपेयी ने शुक्लजी के छायावाद और रहस्यवाद से संबंधित विचारों की आलोचना की। वाजपेयी जी ने शुक्ल जी पर यह आरोप लगाया कि उन्होंने रहस्यवाद की तुलना कनकौए से करके और छायावाद की आलोचना करके नवीन कविता के साथ अन्याय किया है। उनके अनुसार, शुक्ल जी ने छायावाद और रहस्यवाद को पूरी तरह से समझने में चूक की और इसका महत्व कम आंका।
Information Booster:
• वाजपेयी जी का मानना था कि छायावाद और रहस्यवाद का हिंदी कविता में महत्वपूर्ण स्थान है।
• उन्होंने शुक्ल जी पर यह आरोप लगाया कि उन्होंने छायावाद के अध्यात्मिक पक्ष को ठीक से नहीं समझा।
• रहस्यवाद को शुक्ल जी ने कनकौए (छोटी पतंग) से तुलना की थी, जिसका वाजपेयी जी ने विरोध किया।
Additional Knowledge:
• **छायावाद-प्रगतिवाद :** प्रगतिवाद छायावाद के बाद आया और इसका छायावाद से वैचारिक मतभेद था, लेकिन वाजपेयी जी ने इसकी आलोचना नहीं की।
• **छायावाद-प्रयोगवाद :** प्रयोगवाद और छायावाद भिन्न धाराएं हैं, जिन पर वाजपेयी जी का ध्यान नहीं था।
• **रहस्यवाद-प्रयोगवाद:** रहस्यवाद और प्रयोगवाद के विचारों पर वाजपेयी जी ने आलोचना नहीं की।

S20. Ans.(a)
Sol. नन्द दुलारे वाजपेयी छायावाद के प्रारंभिक और समर्थक थे। वे छायावाद के आध्यात्मिक पक्ष को प्रकट करते हुए इसके सांस्कृतिक और मानवीय प्रेरणा के पक्षधर थे। उन्होंने छायावाद का समर्थन किया और उसके महत्व को प्रतिपादित किया, विशेष रूप से उसके आध्यात्मिक पक्ष का बचाव किया।
Information Booster:
• वाजपेयी जी छायावाद को केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रेरणा का रूप मानते थे।
• उन्होंने छायावाद को हिंदी कविता की एक समृद्ध धारा माना, जिसमें गहरे मानवीय और सांस्कृतिक तत्व होते हैं।

• छायावाद के संदर्भ में उनका मानना था कि यह केवल धार्मिक प्रेरणा से संचालित नहीं होता, बल्कि मानवता और संस्कृति से भी जुड़ा हुआ है।

S21. Ans.(a)
Sol. "हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी" नन्द दुलारे वाजपेयी की पुस्तक है। इस पुस्तक में उन्होंने बीसवीं शताब्दी के हिंदी साहित्य की समग्र चर्चा की है और उसमें हुई विभिन्न साहित्यिक धाराओं का विश्लेषण किया है। वाजपेयी जी ने इस पुस्तक में शुक्ल जी के विचारों की आलोचना भी की है, विशेष रूप से छायावाद और रहस्यवाद के संदर्भ में।
Information Booster:
• वाजपेयी जी हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित समालोचक और साहित्यिक आलोचक थे।
• उनकी पुस्तक "हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी" बीसवीं शताब्दी के हिंदी साहित्य पर एक महत्वपूर्ण अध्ययन है।
• इस पुस्तक में उन्होंने छायावाद, रहस्यवाद, और अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया है।
Additional Knowledge:
• **हजारी प्रसाद द्विवेदी:** हजारी प्रसाद द्विवेदी की प्रसिद्ध पुस्तकें "कबीर" और "साहित्य, समाज और संस्कृति" हैं।
• **रामचन्द्र शुक्ल:** रामचन्द्र शुक्ल हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण इतिहासकार और आलोचक थे, उनकी पुस्तक "हिन्दी साहित्य का इतिहास" प्रसिद्ध है।
• **रामविलास शर्मा:** रामविलास शर्मा हिंदी साहित्य के समाजवादी आलोचक थे और उनकी पुस्तक "भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी" प्रसिद्ध है

S22. Ans.(b)
Sol. इस गद्यांश में मुख्यतः पृथ्वी की जलवायु में होने वाले परिवर्तनों पर चर्चा की है।

S23. Ans.(d)
Sol. पृथ्वी की जलवायु में होने वाले परिवर्तनचिंता का विषय इसलिए है क्योंकि इनसे पृथ्वी पर जीवन के लिए खतरा है।

S24. Ans.(d)
Sol. 'क्योटो प्रोटोकोल' का मुख्य उद्देश्य है- औद्योगिक देशों के ग्रीन हाउसगैसों के उत्सर्जन पर लगाम लगाना और उन योजनाओं को वित्त उपलब्ध कराना जो हानिकारक गैसों का उत्सर्जन नहीं करतीं।

S25. Ans.(d)
Sol. 'ग्लोबल वार्मिंग' के खतरे से बचने के लिए किए जाने वाले उपायों में ज्यादा प्रदूषण फैलाने वाले देशों के बीच ऊर्जा की भावी जरूरतों को पूरा करने के उपायों पर सहमति बनाना शामिल है।

S26. Ans.(b)
Sol. "ग्लोबल वार्मिंग"से तात्पर्य है- पृथ्वी का गर्म होना।

S27. Ans.(b)
Sol. 'कुसुमाकर' का अर्थ होता है "वसंत ऋतु" या "ऋतुराज"। यह वह समय होता है जब फूल (कुसुम) खिलते हैं और प्रकृति पूरी तरह से सज जाती है। 'कुसुमाकर' के समानार्थी 'मधु', 'माधव', और 'ऋतुराज' हैं, क्योंकि ये सभी वसंत ऋतु को ही दर्शाते हैं। परंतु 'इन्द्रलोक' का अर्थ स्वर्ग है, जिसका 'कुसुमाकर' से कोई संबंध नहीं है, इसलिए यह सही समानार्थी नहीं है।
Information Booster:
• कुसुमाकर का शाब्दिक अर्थ है फूलों का घर, और इसका तात्पर्य वसंत ऋतु से होता है।
• वसंत ऋतु को 'मधु' और 'माधव' भी कहा जाता है।
• 'ऋतुराज' का अर्थ है ऋतुओं का राजा, और यह भी वसंत ऋतु का ही एक नाम है।
• 'इन्द्रलोक' स्वर्गलोक को कहते हैं, जो कि वसंत ऋतु से संबंधित नहीं है।
Additional Information:
• **मधु** : वसंत ऋतु का एक अन्य नाम है, इसलिए यह कुसुमाकर का समानार्थी है।
• **इन्द्रलोक**: यह स्वर्ग का नाम है और कुसुमाकर का समानार्थी नहीं है।

• **माधव** : वसंत ऋतु का पर्यायवाची है।
• **ऋतुराज** : वसंत ऋतु का दूसरा नाम है, जिसका अर्थ है ऋतुओं का राजा।

S28. Ans.(c)
Sol. 'यमुना' एक व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द है। व्यक्तिवाचक संज्ञा जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति , वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे-
व्यक्ति का नाम: संध्या, धर्मेश, सुरेश, सचिन आदि।
वस्तु का नाम: गीता, रामायण, कार, घर आदि।
स्थान का नाम: कच्छ, गुजरात, मुंबई, दिल्ली आदि।
दिशाओं के नाम: उत्तर, पश्चिम, पूर्व, दक्षिण
नदियों के नाम: गंगा, जमुना, सरस्वती, कावेरी , नर्मदा आदि।

S29. Ans.(c)
Sol. 'उत्कर्ष' का विलोम शब्दअपकर्षहै। उत्कर्ष का अर्थ है उन्नति, विकास या प्रगति, जबकि अपकर्ष का अर्थ होता है पतन, अवनति या गिरावट। ये दोनों शब्द एक-दूसरे के विपरीत अर्थ व्यक्त करते हैं। इसलिए 'उत्कर्ष' का सही विलोम शब्द 'अपकर्ष' है।
Information Booster:
• **उत्कर्ष का अर्थ:**उत्कर्ष का अर्थ होता है उन्नति, प्रगति या विकास। यह शब्द सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ने का संकेत देता है।
• **अपकर्ष का अर्थ:**अपकर्ष का अर्थ है पतन, गिरावट या अवनति। यह नकारात्मक दिशा में पीछे हटने का प्रतीक है।
• **विलोम शब्द का महत्व:**विलोम शब्द वह शब्द होता है जो किसी अन्य शब्द के विपरीत अर्थ को व्यक्त करता है। उदाहरण: 'अच्छा' का विलोम 'बुरा'।
• **उन्नति और पतन:**उत्कर्ष और अपकर्ष जीवन में उन्नति और अवनति के विचार को व्यक्त करते हैं।

S30. Ans.(d)
Sol. 'कोटर' शब्द का तद्भव रूप 'खोखल' है। तद्भव शब्द वे शब्द होते हैं जो संस्कृत से समय के साथ परिवर्तित होकर आधुनिक भाषाओं में प्रयोग होते हैं। 'कोटर' संस्कृत का शब्द है, जिसका अर्थ पेड़ या किसी वस्तु में खोखली जगह होता है। इस शब्द का तद्भव रूप 'खोखल' है, जो बोलचाल की भाषा में प्रयोग किया जाता है।
Information Booster:
• तद्भव शब्द वे शब्द होते हैं जो संस्कृत के तत्सम शब्दों से उत्पन्न होकर बदलते रूप में आधुनिक भाषाओं में आते हैं।
• 'कोटर' का अर्थ खोखली जगह होता है, जैसे पेड़ में।
• 'खोखल' शब्द का उपयोग मुख्य रूप से हिंदी के ग्रामीण या सामान्य बोली में होता है।
• तद्भव शब्दों का उपयोग प्रायः अपभ्रंश या बोली की भाषा में होता है।
• 'कोटर' जैसे शब्द साहित्यिक भाषा में अधिक प्रचलित होते हैं, जबकि 'खोखल' जैसे शब्द दैनिक जीवन की भाषा में प्रचलित होते हैं।
Additional Information:
• **शत** : यह 'सौ' का तत्सम शब्द है, जिसका तद्भव रूप 'सौ' है।
• **नित्य** : 'नित्य' का तद्भव रूप 'नित' हो सकता है, जो अधिक संक्षिप्त है और दैनिक उपयोग में आता है।
• **कोटक** : यह शब्द तत्सम नहीं है और इसका तद्भव 'खोखल' से संबंध नहीं है।
• **खोखल** : यह 'कोटर' का तद्भव रूप है, जिसका अर्थ किसी वस्तु का खोखला भाग होता है।